

Chapter-9

ईशः कुत्रास्ति

2 MARKS QUESTIONS

1. रवीन्द्रनाथ टैगोरस्य विश्वविख्यातकृतिः काऽस्ति?

उत्तरम् :

रवीन्द्रनाथ टैगोरस्य विश्वविख्यात कृतिः गीताञ्जलिरस्ति।

2. ईश्वरः कुत्रास्ति?

उत्तरम् :

यत्र लाङ्गलिकः कठिनां भूमिं कर्षति तत्रास्तीशः।

3. कविः कान् त्यक्तुं कथयति?

उत्तरम् :

कविः जपमालां गानञ्च त्यक्तुं कथयति।

4. मुक्तिः विषये कवेः का मान्यता वर्तते?

उत्तरम् :

मुक्तिः विषये कविः कथयति यत् मुक्तिः कुत्रापि नास्ति।

5. भुवं कः सृजति?

उत्तरम् :

ईशः सलीलं भुवम् सृजति।

6. कविः काम् क्षेप्तुं कथयति?

उत्तरम् :

कविः शुद्धां शाटी क्षेप्तुं कथयति।

7. गीताञ्जलेः अनुवादेकः कोऽस्ति?

उत्तरम् :

गीताञ्जलेः अनुवादकः को. ल. व्यासराय शास्त्री अस्ति।

8. नोबेलपुरस्कार विजेता कः कविरस्ति?

उत्तरम् :

नोबेलपुरस्कार विजेता कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ टैगोर अस्ति।

9. ईशः कुत्र नास्ति?

उत्तरम् :

पिहितद्वारे देवागारे ईशः नास्ति।

10. जनपदरथ्याकर्ता कान् दारयते?

उत्तरम् :

जनपदरथ्याकर्ता प्रस्तरखण्डान् दारयते।

11. कवि रवीन्द्रनाथानुसारेण कस्मिन् क्षति स्ति?

उत्तरम् :

कविः रवीन्द्रनाथानुसारेण यदि वसनं धूसरितं स्यात् यदि च सहस्रच्छिद्रं स्यात् तर्हि क्षति स्ति।

12. किं हित्वा कविः बहिरागमनाय कथयति?

उत्तरम् :

ध्यानं हित्वा कविः बहिरागमनाय कथयति।

4 MARKS QUESTIONS

1. संस्कृतभाषाया उत्तरं दीयताम्

(क) ईशः कुत्रास्ति? इति पाठः कस्माद् ग्रन्थात्सङ्कलितः?

(ख) लाङ्गलिकः किं करोति?

(ग) प्रस्तरखण्डान् कः दारयते?

(घ) ईश्वरः काभ्यां सार्द्धं तिष्ठति?

(ङ) कविः जनान् कुत्र गन्तुं प्रेरयति?

(च) कविः किं चिन्तयितुं कथयति?

उत्तराणि:

(क) 'ईशः कुत्रास्ति' इति पाठः 'गीताञ्जलि' इति ग्रन्थात् सङ्कलितः।

(ख) लाङ्गलिकाः कठोर भूमिं कर्षन्ति।

(ग) जनपदरथ्याकर्ता प्रस्तर खण्डान् दारयते।

(घ) ईशः वर्षा आतपयोः मलिनवपुभिः सार्द्धं तिष्ठति।

(ङ) कविः जनान् कार्यक्षेत्रे गन्तुं प्रेरयति।

(च) कविः तत्त्वमिदं चिन्तयितुं कथयति।

2.. रिक्तस्थानानि पूरयत

- (क) अस्मिन् कं भजसे।
 (ख) स्वेदजलार्द्रः तिष्ठ।
 (ग) ध्यानं हित्वा एहि।
 (घ) यदि तव धूसरितं स्यात् ।

उत्तराणि:

- (क) अस्मिन् तमोवृत्ते कं भजसे।
 (ख) स्वेदजलार्द्रः पश्यन् तिष्ठ।
 (ग) ध्यानं हित्वा बहिः एहि।
 (घ) यदि तव वसनं धूसरितं स्यात्।

3. अधोलिखितपदाना वाक्येषु प्रयोगं कुरुत

सार्द्धम्, सविधे, हित्वा, एहि, धूसरितम्, भवेत्।

उत्तराणि:

शब्द	अर्थ	वाक्य-प्रयोग
सार्द्धम्	साथ में	ईश्वरः वर्षातपयोः ताभ्यां <u>सार्द्धम्</u> तिष्ठति।
सविधे	पास में	ईश्वर अस्माकं <u>सविधे</u> तिष्ठति।
हित्वा	छोड़कर	ध्यानं <u>हित्वा</u> त्वं बहिः एहि।
एहि	आओ	त्वं मलिनवपुः इव पांसुरभूमिम् <u>एहि</u> ।

धूसरितम्	धूल से युक्त	तव वसनं धूसरितम् अस्ति।
भवेत्	होना चाहिए	अस्मिन् क्षेत्रे किं भवेत्?

4. अधोलिखितेषु सन्धिं कुरुत

(क) तमोवृते + अस्मिन् =

(ख) ईशः + तिष्ठति =

(ग) बहिः + एहि =

उत्तराणि:

(क) तमोवृत्तेऽस्मिन्।

(ख) ईशस्तिष्ठति।

(ग) बहिरेहि।

5. अधोऽङ्कितेषु सन्धिविच्छेदं कुरुत

(क) नास्त्यत्रेशः = +

(ख) पश्यस्तिष्ठ = +

(ग) तनिकटे = +

उत्तराणि:

(क) नास्त्यत्रेशः न + अस्ति + अत्र + ईशः

(ख) पश्यस्तिष्ठ = पश्यन् + तिष्ठ

(ग) तन्निकटे = तत् + निकटे

6. ईशस्तिष्ठति वर्षातपयो

स्ताभ्यां साधु मलिनवपुः।

दूरे क्षिप तव शुद्धां शाटी

मेहि स इव पांसुरभूमिम् ॥

इत्यस्य श्लोकस्य अन्वयं लिखत

अन्वयः

मलिनवपुः ईशः वर्षा आतपयोः ताभ्यां सार्धं तिष्ठति (अत्रः) तव शुद्धां शाटीं दूरे क्षिप् (त्वम्) स इव पांसुरभूमिम् एहि।

अधोलिखितौ श्लोकौ पठित्वा एतदाधारितानाम् प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लिखत।

(निम्नलिखित श्लोकों को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए)

(7) तत्रास्तीशः, कठिनां भूमि

यत्र हि कर्षति लाङ्गलिकः।

यत्र च जनपदरथ्याकर्ता

प्रस्तरखण्डान् दारयते ॥

प्रश्नाः

(i) लाङ्गलिकः किं करोति?

(ii) प्रस्तरखण्डान् कः दारयते?

(iii) अस्य श्लोकस्य पाठः कस्मात् ग्रन्थात् सङ्कलितः?

उत्तराणि:

- (i) लाङ्गलिकः कठोर भूमिं कर्षति।
- (ii) जनपदरथ्याकर्ता प्रस्तरखण्डान् दारयते।
- (iii) अस्य श्लोकस्य पाठः 'गीताञ्जलि' इतिग्रन्थात् सङ्कलितः।

8. ईशस्तिष्ठति वर्षातपयो

स्ताभ्यां साधु मलिनवपुः।

दूरे क्षिप तव शुद्धां शाटी

मेहि स इव पांसुरभूमिम् ॥

प्रश्नाः

- (i) ताभ्यां सार्धं कः तिष्ठति?
- (ii) शुद्धां शाटी कुत्र क्षिप्?
- (iii) ईश्वरः काभ्यां सार्धं तिष्ठति?

उत्तराणि:

- (i) ताभ्यां साधु ईशः तिष्ठति।
- (ii) शुद्धां शाटीं दूरे (बहिः) क्षिप्।
- (iii) ईशः वर्षा आतपाभ्यां मलिनवपुः सार्धं तिष्ठति।

9. अधोलिखित रेखांकित पदानि आधृत्य संस्कृतेन प्रश्न निर्माणं कुरुत
(निम्नलिखित रेखांकित पदों को देखकर संस्कृत में प्रश्न निर्माण कीजिए)

(क) यत्र हि कर्षति लाङ्गलिकः।

(ख) त्यज जपमालां त्यज तव गानं।

(ग) ईशः वर्षातपयोः ताभ्यां सार्धं तिष्ठति।

(घ) स्वेदजलार्द्रः तन्निकटे कार्यक्षेत्रे पश्यन् तिष्ठा।

उत्तरमः

(क) यत्र हि कर्षति कः?

(ख) त्यज कां त्यज तव गानं?

(ग) ईशः कयोः ताभ्यां सार्धं तिष्ठति?

(घ) स्वेदजलार्द्रः तन्निकटे कस्मिन् पश्यन् तिष्ठ?

7 MARKS QUESTIONS

1. “तत्रास्तीशः कठिनां भूमिं दारयते” इत्यस्य काव्यांशस्य व्याख्या हिन्दीभाषया कर्तव्या।

उत्तराणि:

प्रस्तुत श्लोक ‘शाश्वती प्रथमो भागः’ पुस्तक के अन्तर्गत ‘ईशः कुत्रास्ति’ नामक पाठ से उद्धृत है। यह पाठ मूल रूप से नोबेल पुरस्कार विजेता गुरुदेव कविवर ‘रवीन्द्र नाथ टैगोर’ की विश्व प्रसिद्ध रचना ‘गीताञ्जलि’ के संस्कृत अनुवाद से संकलित है। इस श्लोक में ईश्वर के निवास स्थान के विषय में बताया गया है। व्याख्या-लोग ईश्वर की खोज मन्दिरों, मस्जिदों व गिरिजाघरों में करते हैं किन्तु ईश्वर की उपलब्धि इन स्थानों पर नहीं होती।

ईश्वर वहाँ हैं, जहाँ किसान कठोर भूमि पर सूर्य की कड़ी धूप में कठिन परिश्रम करता है। कठोर भूमि को जोतकर अन्न उगाने वाली बनाता है। ईश्वर वहाँ है जहाँ कठोर, कड़ी धूप में सड़क निर्माता पत्थरों को तोड़कर राजमार्गों पर बिछाते व सड़कों का निर्माण करते हैं। पसीने से जिनके वस्त्र गल जाते हैं उनमें हजारों छिद्र हो जाते हैं। इन्हीं लोगों के बीच में ईश्वर का निवास है। हमें इस तथ्य पर विचार करना चाहिए तभी हम इस बिंदु पर पहुँच सकेंगे कि कर्म ही पूजा है।

श्लोकों के सरलार्थ एवं भावार्थ

2. देवागारे पिहितद्वारे

तमोवृत्तेऽस्मिन् भजसे कम्?

त्यज जपमालां त्यज तव गानं

नास्त्यत्रेशः स्फुटय दृशम् ॥

अन्वय अस्मिन् तमोवृत्ते पिहितद्वारे देव-अगारे कं भजसे? जपमालां त्यज, तव गानं त्यज, दृशं स्फुटय अत्र ईशः न अस्ति।

शब्दार्थ देवागारे = देव मन्दिर में। पिहितद्वारे = बंद दरवाज़े वाले। तमोवृत्तेऽस्मिन् (तमः + आवृत्ते + अस्मिन्) = अंधकार से आच्छादित इसमें। जपमालां = मंत्र आदि जपने की माला को। नास्त्यत्रेशः (न + अस्ति + अत्र + ईश) = यहाँ ईश्वर नहीं है। स्फुटय = खोलो। दृशम् = दृष्टि (आँखों) को।

प्रसंग-प्रस्तुत श्लोक 'शाश्वती प्रथमो भागः' पुस्तक के अन्तर्गत 'ईशः कुत्रास्ति' नामक पाठ से उद्धृत है। यह पाठ मूल रूप से नोबेल पुरस्कार विजेता गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर की विश्व प्रसिद्ध रचना 'गीताञ्जलि' के संस्कृत अनुवाद से संकलित है।

सन्दर्भ-निर्देश-इस श्लोक में बताया गया है कि ईश्वर को सही स्थान पर खोजने का प्रयत्न करो। क्योंकि वे मन्दिर अथवा जपमाला आदि में नहीं रहते।

सरलार्थ हे मानव! इस अंधकार से आच्छादित बन्द दरवाज़े वाले देव मन्दिर में (त) किसका भजन कर रहा है? मंत्र आदि जपने की माला को छोड़ो, अपने गीत को छोड़ो। अपनी आँखों को खोलो और देखो यहाँ ईश्वर नहीं है।

भावार्थ भाव यह है कि ईंट-गारे आदि से निर्मित मन्दिर में प्रभु का निवास नहीं है। इसके साथ जपमाला आदि बाह्य आडंबरों से भी उनकी प्राप्ति संभव नहीं है। उनकी प्राप्ति तो अपने ज्ञान चक्षुओं के माध्यम से ही संभव है। अतः अपने ज्ञान चक्षुओं को खोलकर ईश्वर को ढूँढ़ने का प्रयत्न करना चाहिए।

3. तत्रास्तीशः, कठिनां भूमि

यत्र हि कर्षति लाङ्गलिकः।

यत्र च जनपदरथ्याकर्ता

प्रस्तरखण्डान् दारयते ॥

अन्वय-हि यत्र लाङ्गलिकः कठिनां भूमिं कर्षति, यत्र च जनपदरथ्याकर्ता प्रस्तरखण्डान् दारयते, तत्र ईशः अस्ति।

शब्दार्थ तत्रास्तीशः (तत्र + अस्ति + ईशः) = ईश्वर वहाँ है। कर्षति = हल चलाता है। हि = निश्चय से। लाङ्गलिकः = हलवाहा। जनपदरथ्याकर्ता = जनपद की सड़क का निर्माण करने वाला। प्रस्तरखण्डान् = पत्थरों के टुकड़ों को। दारयते = तोड़ता है।

प्रसंग प्रस्तुत श्लोक 'शाश्वती प्रथमो भागः' पुस्तक के अन्तर्गत 'ईशः कुत्रास्ति' नामक पाठ से उद्धृत है। यह पाठ मूल रूप से नोबेल पुरस्कार विजेता गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर की विश्व प्रसिद्ध रचना 'गीताञ्जलि' के संस्कृत अनुवाद से संकलित है।

सन्दर्भ-निर्देश इस श्लोक में बताया गया है कि सच्चे अर्थों में ईश्वर का निवास कहाँ है।

सरलार्थ-निश्चय से जहाँ किसान कठोर धरती पर हल चलाता है तथा जहाँ जनपद की सड़क का निर्माण करने वाला मजदूर पत्थरों के टुकड़ों को तोड़ता है, वहाँ ईश्वर विद्यमान है।

भावार्थ भाव यह है कि भारत के किसानों तथा मजदूरों के कर्मक्षेत्र में ही ईश्वर का निवास है।

4. ईशस्तिष्ठति वर्षातपयो

स्ताभ्यां साधु मलिनवपुः।

दूरे क्षिप तव शुद्धां शाटी

मेहि स इव पांसुरभूमिम् ॥

अन्वय मलिनवपुः ईशः वर्षा आतपयोः ताभ्यां सार्धं तिष्ठति (अतः) तव शुद्धां शाटी दूरे क्षिप स इव पांसुरभूमिम् एहि।

शब्दार्थ-ईशस्तिष्ठति (ईशः + तिष्ठति) = ईश्वर ठहरता है। वर्षातपयोः = वर्षा और धूप में। सार्धं = साथ। मलिनवपुः = मैल युक्त शरीर वाला। क्षिप = फेंको। शुद्धां = स्वच्छ/साफ। शाटी = साड़ी को। एहि = आओ। स इव = उसकी तरह। पांसुरभूमिम् = धूल-धूसरित जमीन पर।

प्रसंग-प्रस्तुत श्लोक 'शाश्वती प्रथमो भागः' पुस्तक के अन्तर्गत 'ईशः कुत्रास्ति' नामक पाठ से उद्धृत है। यह पाठ मूल रूप से नोबेल पुरस्कार विजेता गुरुदेव 'रवीन्द्रनाथ टैगोर' की विश्व प्रसिद्ध रचना 'गीताञ्जलि' के संस्कृत अनुवाद से संकलित है।

सन्दर्भ-निर्देश इस श्लोक में बताया गया है कि दीन-हीन व्यक्ति में ही ईश्वर विद्यमान है।

सरलार्थ मैलयुक्त शरीर वाला दीन-हीन ईश्वर वर्षा और धूप में उन दोनों के साथ ठहरता है। इसलिए तुम तेरी (अपनी) साफ साड़ी को दूर फेंक दो तथा उसकी भाँति धूल-धूसरित धरती पर आओ।

भावार्थ भाव यह है कि हे मानव! बाहरी वेशभूषा को त्यागकर गरीब व्यक्ति की भाँति मिट्टी वाली जमीन पर आ जाओ। मलिन वस्त्रों को धारण करके बरसात तथा धूप की परवाह न करने वाले किसान के साथ ही ईश्वर विद्यमान है। यदि तुम्हें ईश्वर को प्राप्त करना है तो इन्हीं किसानों के समान वस्त्रों को धारण करके उनके साथ रहो। तुम्हें ईश्वर की प्राप्ति अवश्य होगी।

5. मुक्तिः? क नु सा दृश्या मुक्तिः!

सलीलमीशः सृजति भुवम् ।

तिष्ठति चास्मद्धिताभिलाषी

सविधेऽस्माकं मिषन् सदा ॥

अन्वय-मुक्ति? नु सा मुक्तिः क दृश्या! ईशः सलीलं भुवं सृजति। अस्मद्धि हित-अभिलाषी च मिषन् सदा अस्माकं सविधे तिष्ठति।

शब्दार्थ-मुक्तिः = मुक्ति अथवा मोक्ष। दृश्या = देखी गई। सलीलं = क्रीड़ा के साथ। सृजति = बनाता है। भुवं = पृथ्वी को। अस्मद्धिताभिलाषी (अस्मद् + हित + अभिलाषी) = हमारा हित चाहने वाला। सविधे = समीप में। मिषन् = देखता हुआ।

प्रसंग-प्रस्तुत श्लोक 'शाश्वती प्रथमो भागः' पुस्तक के अन्तर्गत 'ईशः कुत्रास्ति' नामक पाठ से उद्धृत है। यह पाठ मूल रूप से नोबेल पुरस्कार विजेता गुरुदेव 'रवीन्द्रनाथ टैगोर' की विश्व प्रसिद्ध रचना 'गीताञ्जलि' के संस्कृत अनुवाद से संकलित है।

सन्दर्भ-निर्देश इस श्लोक में बताया गया है कि ईश्वर सदा हमारे साथ रहता है।

सरलार्थ मुक्ति अथवा मोक्ष? निश्चय से वह मुक्ति (अथवा मोक्ष) कहाँ देखी गई है अर्थात् किसने उस मुक्ति को अपनी आँखों से देखा है। ईश्वर क्रीड़ा के साथ इस पृथ्वी लोक की रचना करता है अर्थात् सृष्टि का निर्माण करता है तथा हमारा हित चाहने वाला वह ईश्वर देखता हुआ हमेशा हमारे समीप में निवास करता है।

भावार्थ भाव यह है कि मोक्ष की सच्चाई क्या है। इस बात को स्पष्ट रूप में नहीं बताया जा सकता, परन्तु इस सृष्टि का कर्ता स्वयं ईश्वर है। वह ईश्वर हमारी रक्षा करता हुआ सदा हमारे साथ ही रहता है।

6. ध्वानं हित्वा बहिरेहि त्वं

त्यज तव कुसुमं त्यज धूपम्।

पश्यस्तिष्ठ स्वेदजलार्द्रं

स्तनिकटे कार्यक्षेत्रे ॥

अन्वय-त्वं ध्वानं हित्वा बहिः एहि, तव कुसुमं त्यज, धूपं त्यज। स्वेदजलार्द्रः तत् निकटे कार्यक्षेत्रे पश्यन् तिष्ठ।

शब्दार्थ-ध्वानं हित्वा = अंधकार को छोड़कर। बहिरेहि = बाहर आओ। कुसुमं = फूल को। स्वेदजलार्द्रः = पसीने की बूंदों से गीले। तन्निकटे (तत् + निकटे) = उसके समीप में। कार्यक्षेत्रे = कार्य करने की जगह पर।

प्रसंग-प्रस्तुत श्लोक 'शाश्वती प्रथमो भागः' पुस्तक के अन्तर्गत 'ईशः कुत्रास्ति' नामक पाठ से उद्धृत है। यह पाठ मूल रूप से नोबेल पुरस्कार विजेता गुरुदेव 'रवीन्द्रनाथ टैगोर' की विश्व प्रसिद्ध रचना 'गीताञ्जलि' के संस्कृत अनुवाद से संकलित है।

सन्दर्भ-निर्देश-इस श्लोक में बताया गया है कि तुम पुष्प एवं धूप आदि का त्याग करके पसीने से लथपथ श्रमिक को देखो।

सरलार्थ-(हे मानव!) तुम अंधकार को छोड़कर बाहर आओ। तुम (मूर्ति पर चढ़ाने के लिए हाथ में रखे) फूल को एवं (पूजा के लिए धूप-दीप) धूप को छोड़ दो। पसीने की बूंदों से गीले अर्थात् लथपथ उस मजदूर के समीप में कार्य करने की जगह पर जाओ।

भावार्थ भाव यह है कि ईश्वर की पूजा के लिए पुष्प एवं धूप आदि का त्याग करके श्रमिकों की कार्यस्थली पर जाना उचित है। क्योंकि ईश्वरीय सत्ता का दर्शन उसी स्थान पर हो सकता है।

7. यदि तव वसनं धूसरितं स्यात्

यदि च सहस्रच्छिद्रं स्यात्।

का वा क्षतिरिह तेन भवेत्ते

तत्त्वमिदं चिन्तय चित्ते ॥

अन्वय यदि तव वसनं धूसरितं स्यात् यदि च (तत्) सहस्रच्छिद्रं स्यात् तेन इह का वा ते क्षतिः भवेत्ते, चित्ते इदं तत्त्वं चिन्तय।

शब्दार्थ-वसनं = वस्त्र। धूसरितं = धूल से सना। स्यात् = होवे। सहस्रच्छिद्रं = हजार छिद्रों वाला (फटा-पुराना)। क्षति = हानि। तेन = उससे। ते = तुम्हारी। तत्त्वमिदं = इस तत्त्व को। चिन्तय = सोचो। चित्ते = चित्त में।

प्रसंग प्रस्तुत श्लोक 'शाश्वती प्रथमो भागः' पुस्तक के अन्तर्गत 'ईशः कुत्रास्ति' नामक पाठ से उद्धृत है। यह पाठ मूल रूप से नोबेल पुरस्कार विजेता गुरुदेव 'रवीन्द्रनाथ टैगोर' की विश्व प्रसिद्ध रचना 'गीताञ्जलि' के संस्कृत अनुवाद से संकलित है।

सन्दर्भ-निर्देश-इस श्लोक में बताया गया है कि बाह्य वेशभूषा को न देखते हुए अपनी अन्तरात्मा में ही ईश्वरीय सत्ता को पहचानने का प्रयत्न करना चाहिए।

सरलार्थ-हे मानव! यदि तुम्हारा वस्त्र धूल से सना हुआ मैला है और उसमें यदि हजारों छिद्र हों तो उससे तुम्हारी क्या हानि हो सकती है। अपने चित्त में इस तत्त्व पर विचार करो। अर्थात् इस तात्त्विक प्रसंग को सोचो कि वास्तविकता क्या है?

भावार्थ-भाव यह है कि अपने मैले एवं फटे-पुराने वस्त्रों के विषय में विचार न करके, ईश्वरीय तत्त्व के विषय में चिन्तन करना चाहिए। भौतिकता से जुड़कर चिरन्तन तत्त्व को भूलना उचित नहीं है। अतः मानव को सांसारिकता का परित्याग करके ईश्वरीय तत्त्व के विषय में चिन्तन करना चाहिए।

8.ईशः कुत्रास्ति (वाणी (सरस्वती) का वसन्त गीत) Summary in Hindi

प्रस्तुत पाठ नोबेल पुरस्कार विजेता कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ टैगोर की विश्वविख्यात कृति 'गीताञ्जलि' के संस्कृत अनुवाद से संकलित है। इसमें कवि ने ईश्वर की वास्तविक सत्ता को किसानों, मजदूरों और गरीबों में दर्शाया है। इसके अनुवादक को.ल. व्यासराय शास्त्री हैं। यद्यपि यह पुस्तक मूलतः बंगला भाषा में है। विश्व कवि की यह कृति उनके प्रगतिवादी तथा जनवादी दृष्टिकोण की परिचायिका है, जिसमें ईश्वर को मन्दिरों में ढूँढ़ने की बजाय खेतों-खलिहानों में प्रत्यक्ष अवलोकन करने का संदेश प्रदान किया गया है। सही अर्थों में रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा लिखित यह गीत जनवादी है। आध्यात्मिकता से युक्त पाठ में वर्णित ये गीत मानव चेतना को किसी परोक्ष अनुभूति से जोड़ते हैं, जो सर्वव्यापक तथा सर्वशक्तिमान है।

MULTIPLE CHOICE QUESTIONS

1. कठोरभूमि कः कर्षति?

(A) श्रमिकः

(B) सेवकः

(C) लाङ्गलिकः

(D) भृत्यः

उत्तरम्:

(C) लाङ्गलिकः

2. कविः जनान् कुत्र गन्तुं प्रेरयति?

(A) देवागारे

(B) प्रस्तरखण्डे

(C) पिहित द्वारे

(D) कार्यक्षेत्रे

उत्तरम्:

(D) कार्यक्षेत्रे

3. जनपदरथ्याकर्ता कान् दारयते?

- (A) क्षेत्रान्
- (B) पर्वतान्
- (C) अन्नान्
- (D) प्रस्तरखण्डान्

उत्तरम्:

(D) प्रस्तरखण्डान्

4. 'अत्रेशः' अस्य सन्धिविच्छेदः अस्ति

- (A) अत्र + ईशः
- (B) अत्र + एशः
- (C) अत्र + एशः
- (D) अत्र + ईशः

उत्तरम्:

(A) अत्र + ईशः

5. 'तत् + निकटे' अत्र सन्धियुक्तपदं अस्ति

- (A) तन्निकटे
- (B) तनिकटे
- (C) तनिकटे
- (D) तन्निकटे

उत्तरम्:

(A) तन्निकटे

6. 'देवागारे' अत्र कः समासः?

(A) अव्ययीभावः

(B) कर्मधारयः

(C) बहुव्रीहिः

(D) द्विगुः

उत्तरम्:

(C) बहुव्रीहिः

7. 'कठिनभूमि' इति पदस्य विग्रहः अस्ति

(A) कठिनां भूमिः

(B) कठिनं भूमिं

(C) कठिनः भूमिः

(D) कठिन् भूमिं

उत्तरम्:

(A) कठिनां भूमिः

8. 'हित्वा' इति पदे कः प्रत्ययः?

- (A) ल्यप्
- (B) क्त्वा क्त्वा
- (C) शतृ
- (D) मतुप्

उत्तरम्:(B) क्त्वा

9. 'कुसुमं' इति पदस्य विलोमपदं किम्?

- (A) पुष्पं
- (B) फलं
- (C) कण्टकं
- (D) कष्टं

उत्तरम्:(C) कण्टकं

10. 'लाङ्गलिकः' इति पदस्य पर्याय पदं किम् ?

- (A) कृषकः
- (B) माङ्गलिकः
- (C) लङ्गरः
- (D) भृत्यः

उत्तरम्:(A) कृषकः

FILL IN THE BLANKS

**निर्देशानुसारं रिक्तस्थानानि पूरयत
(निर्देश के अनुसार रिक्त स्थान को पूरा कीजिए)**

(1) 'सलिलमीशः' अस्य सन्धिविच्छेदः अस्ति ।

उत्तराणि: सलिलम् + ईशः,

(2) 'शुद्धशाटी' इति पदस्य विग्रहः अस्ति ।

उत्तराणि: शुद्धां शाटीम्,

(3) 'मलिन वपुः' इति पदस्य विशेषणपद अस्ति ।

उत्तराणि: मलिन।

(4) 'धूसरितंवसनं' इति पदस्य विशेष्यपद अस्ति ।

उत्तराणि: वसनं,

(5) 'मुक्तिः' इति पदस्य विलोमपद वर्तते ।

उत्तराणि: बन्धनम्,

(6) 'साधु' इति पदस्य पर्यायपदं वर्तते।

उत्तराणि: सह।

(ग) अधोलिखितपदानां संस्कृत वाक्येषु प्रयोग करणीयः

(निम्नलिखित पदों का संस्कृत वाक्यों में प्रयोग कीजिए)

(7) ध्वानं,

उत्तराणि: ध्वानं (अंधकार) सूर्यः ध्वानं दूरी करोति।

(8) पांसुरं,

उत्तराणि: पांसुरं (धूल-धूसरित)-भूमिः पांसुरं अस्ति।

(9) लाङ्गलिकः।

उत्तराणि: लाङ्गलिकः (हलवाहा) लाङ्गलिक क्षेत्रं कर्षति।